Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 13/03/2020 Accepted on : 24/03/2020 Publication Date: 31/03/2020

मूल्य परक अध्यापक शिक्षा

कंचन लोहानी
प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
ज्योति कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट साइंस एंड टेक्नोलॉजी बरेली , भारत
ई मेल – lohanikanchan8@gmail.com

सारांश: शिक्षा के द्वारा व्यक्ति एक अच्छा तथा भले आदमी को विकसित होता देखना चाहता है। आज मूल्य परक अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता से कोई इन्कार नहीं कर सकता। कार्टर बी0गुड के अनुसार शिक्षा उन सभी क्रियाओं की समष्टि है जिसे व्यक्ति अपनी योग्यताओं, अभिवृत्तियों तथा समाज के सकारात्मक मूल्यों के व्यवहार प्रतिमान विकसित करता है।

मूल्य शिक्षा सम्बन्धी प्रत्येक योजना का सफल क्रियान्वयन अध्यापकों के वैयक्तिक व्यवहार शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं पर कार्य निष्ठा पर निर्भर करता है। अपने शिष्यों के कलयाण हेतु पुर्णतः श्रृजनशील, परिश्रमी शिक्षकों ने शिक्षा प्रणाली में व्यापक असन्तोश तथा नगण्य लाभों के बाद भी अपने दायित्वों का समर्पण भाव पूरा किया है। दुर्भाग्यवश अनपयुक्त शिक्षकों के कारण हमारी शिक्षा तन्त्र पंगु हो गया है तथा हमारे अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम भावी शिक्षकों में उपयुक्त अभिवृत्तियॉ, शिक्षण प्रवीणता कार्यमूल तथ मानवीय मूल्य विकसित करने में असफल रहते हैं। शिक्षक को मूल्य परक शिक्षा के संचालन के लिए सक्षम होना चाहिए। 1986 राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दस्तावेज में पर्यावरण संरक्षण, नारी सम्मान, सामाजिक न्याय, धर्म निर्पेक्षता और राष्ट्रीय चेतना के विकास पर बल दिया है। अतः शिक्षकों को स्वयं के लिए मूल्यों का निर्धारण करना होगा। उन्हें इन मूल्यों के सम्बन्ध में स्वयं सचेष्ट और सक्रिय रहना होगा। शिक्षण प्रशिक्षण की अवधि में मूल्यों से तथा अपनी संस्कृति से परिचित करना होगा, मूल्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता विकसित करनी होगी। और मूल्यों के शिक्षण के लिए निश्चित शिक्षण संव्यूहन खोजने होंगे। सुयोग्य भावी शिक्षक तैयार करने का दायित्व शिक्षक संस्थानों तथा विभागों का है। भावी शिक्षकों की तैयारी के समय मूल्य परक शिक्षा के सैद्धान्तिक, क्रियात्मक तथा शोध पक्ष पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

अध्यापक शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा हो जो छात्राध्यापकों को एक आदर्श शिक्षक के रूप में स्थापित कर सकें। मूल्य परक शिक्षा अध्यापक शिक्षा के मानवीय पक्ष पर बल दिया जाना चाहिए।

संकेत शब्दः मूल्य परक अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता , समाज के सकारात्मक मूल्य, मूल्यों का निर्धारण ।

१ प्रस्तावनाः:

जहां बच्चे विद्यालयी शिक्षा का केन्द्र होते हैं वहीं दूसरी ओर उन्हें ज्ञानार्जन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका एक अध्यापक की होती है। हमारे देश का विकास मुख्य रूप से अध्यापक के गुणों पर निर्भर करता है इसी कारण शिक्षण कार्य को सभी कार्यो में से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। हमारे देश में अध्यापक शिक्षा को सर्वश्रेष्ठ बनाये रखने हेतु मूल्यों के आधार पर अध्यापक शिक्षा के गुणों को अभिवर्द्धन करने की बहुत आवश्यकता है।

"The introduction of a sound programme of Profesional education to teachers".

आज मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता से कोई भी व्यक्ति इन्कार नहीं कर सकता है। अध्यापक शिक्षा के माननीय पक्ष पर बल देना चाहिए।

कार्टर वी गुड ने कहा है कि "शिक्षा उन सभी क्रियाओं की समष्टि है जिसे व्यक्ति अपनी योग्यताओं, अभिवृत्तियों तथा समाज के सकारात्मक मूल्यों के व्यवहार प्रतिमान शिक्षा आयोग (1964–66) ने अपने प्रतिवेदन मे कहा है विद्यालय शिक्षाक्रम में एक गम्भीर दोष यह है कि उसमे सामाजिक नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा की व्यवस्था की कमी है।

मूल्य शिक्षा सम्बन्धी प्रत्येक योजना का सफल क्रियान्वयन अध्यापको के वैयक्तिक व्यवहार शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं एवं कार्यनिष्ठा पर निर्भर करता है। शिक्षक को मूल्य परक शिक्षा के संचलन के लिए सक्षम होना चाहिए!

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1989) के अनुसार पर्यावरण संरक्षण, नारी सामाजिक न्याय, छोटा परिवार, धर्म निरपेक्षता व राष्ट्रीय चेतना के विकास पर बल दिया गया है।

शिक्षण प्रशिक्षण अवधि में मूल्यों से अपनी संस्कृति से परिचित करना होगा। मूल्य आत्मसातीकरण शिक्षा का एक स्वतन्त्र विषय ही नहीं, बल्कि इसका एक अभिन्न कार्यक्रम है जो इसकी सभी क्रियाओं, पाठ्यचर्या तथा सहगामी क्रियाओं के साथ अन्तर्ग्रन्थित है।

२ शिक्षकों के शैक्षणिक गुणों के अभिवर्द्धन में मूल्यो की भूमिका:

प्रवीण तथा प्रभावी शिक्षकों को तैयार करने का उत्तरदायित्व अध्यापकों पर है शिक्षक–प्रशिक्षक छात्राध्यापकों के मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में चयनित प्रशिक्षण संस्थाओ को जिला शिक्षा एंव प्रशिक्षण संस्थान (DIET) शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (CTE) व शिक्षा में उच्च अध्ययन संस्थान (CTE) व शिक्षा में उच्च अध्ययन संस्थान (IASE) को विकसित करने की बात कही थी। देश में प्रथम बार स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए रिफ्रेशर कोर्स चलाये गये।

मूल्य परक अध्यापक शिक्षा में मूल्यों के द्वारा शिक्षकों का सन्तुलित व्यक्तित्व का विकास होता है।

मूल्य शिक्षा शिक्षक के अंदर मूल्यों के अनुसार आचरण करने के लिए प्रेरित करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) की कार्य–योजना में इस सन्दर्भ में कहा गया है "नई नीति के प्रतिबलों के सन्दर्भ में अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या को सुधारने की आवश्यकता है। मुख्य रूप से शिक्षा तथा संस्कृति के समाकलन, कार्य अनुभव, शारीरिक शिक्षा तथा खेलकूद, भारतीय संस्कृति के अध्ययन तथा भारत की एकता एंव समाकलन विषयक समस्याओं पर बल दिया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह माना गया है कि शैक्षिक प्रौद्योगिकी न केवल शिक्षण– अधिगम प्रक्रिया की विधियों को बल्कि उसकी विषय–वस्तु तथा रूपरेखा को भी प्रभावित करेगी।

पाठ्यपुस्तकों में पाश्चातय विचारों पर अत्यधिक बल दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण परिषद व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को नई अधिगम सामग्रियों को तैयार करने का काम अपने हाथ मे लेना चाहिए।"

ये अधिगम सामग्रियॉ जैसेः– पाठ्य–पुस्तकें, संदर्भ पुस्तके, हैण्ड–बुक्स, स्लाइड, टेप व फिल्म आदि ऐसी हो जिनमें शिक्षा में भारतीय अनुभवों का दिग्दर्शन हो सके।

मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा के लिए अध्यापक शिक्षा के मानवीय पक्ष पर बल दिया जाना चाहिए। राम शंकर शुक्ल (1989) का मत है कि शिक्षक शिक्षा के माध्यम से प्रयत्न किया जाना चाहिए कि छात्रो के मस्तिष्क पर धीरे–धीरे जातिवाद, भाषावाद सम्प्रदाय, प्रान्तीयता आदि के संकीर्ण विचारों पर प्रभाव खत्म हो जाये। नेशनल करीकूलम फार टीचर एजूकेशन ए फ्रेनवर्क (1989) में उल्लेख किया है कि "शैक्षिक सुधार का एक प्रमुख निवेदन यह है कि शिक्षा को सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के संवर्धन का एक सबल उपकरण बनाया जाए! मूल्य परक अध्यापक शिक्षा के औपचारिक स्वरूप में प्रत्येक स्तर के लिए उपुर्यक्त पाठ्यक्रम का होना अति आवश्यक है ताकि निर्धारित उद्देश्यों की सम्प्राप्ति उसके माध्यम से कर पाना सम्भव हो सके। पाठ्यक्रम के क्षेत्र में नित्य नवीन समावेश आवश्यकता को किसी भी स्तर पर आज अस्वीकार नहीं किया जा सकता क्योकि नये प्रयोग तथा नवाचारिक प्रयत्नों के कारण निरन्तर ज्ञान के क्षेत्र में वृद्धि हो रही है ? पाठ्यक्रम में परिवर्तन विद्यालीय शिक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर भी किया जाना अपेक्षित हो जाता है ताकि भावी अध्यापक नवीनतम विद्यालयी पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षण कार्य करने में सक्षम हो सके।

NCERT नई दिल्ली के द्वारा 1970 में पूर्व–प्राथमिक स्तर के लिए जिस पाठ्यक्रम प्रारूप को प्रस्तुत किया गया था, जिसके आधार पर उसकी रूपरेखा इस प्रकार है। भाग (अ) सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम भाग (ब) नर्सरी विद्यालय निरीक्षण एवं सहभागिता।

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के दार्शनिक आधार तथा ऐताहासिक पृष्ठभूमि, मनोवैज्ञानिक आधार, शिक्षण विधि तथा साधन, भाषा, विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन आते है।

नर्सरी विद्यालय निरीक्षण एंव सहभागिता के अर्न्तगत छात्र कार्यक्रम शिक्षण विधि तथा साधन, क्षेत्र भ्रमण और अभिभावक, सामुदायिक कार्यक्रम विवरण शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम आदि है।

मूल्य परक अध्यापक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के फ्रेमवर्क (1989) में यह माना है कि अध्यापक शिक्षा निश्चित रूप से किसी व्यक्ति को शिक्षण व्यवसाय में भेजने की तैयारी कराने का कार्यक्रम है तथा इसमें व्यापक प्रोफेशनल ज्ञान, मूल्यों एवं कौशलों के अधिगम के लिए व्यवस्था होनी चाहिए।

फ्रेमवर्क के अनुसार सम्पूर्ण कार्यक्रम के चार मुख्य अवयव निम्नलिखित हैः–

1. फाउण्डेशन कोर्स
2. अवस्था प्रासंगिक विशिष्टीकरण
3. अतिरिक्त विशिष्टीकरण
4. प्रायोगिक/क्षेत्रीय अनुभव

मूल्य अभिविन्यास की दृष्टिकोण से अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की समीक्षा हेतु मूल्य परक अध्यापक शिक्षा के लिए रूपरेखा तैयार की जिसे सम्पूर्ण अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग माना है।

३ सांराशः

देश के भावी कार्णधारों को सर्वोत्तम प्रकार की शिक्षा प्रदान करने हेतु मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा देना आवश्यक है। अध्यापक शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद अध्यापक शिक्षकों तथा अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अनुसंधानकर्त्ताओं को मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा की प्रभावी योजना के निर्माण एवं क्रियान्वयन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। यदि हम ऐसी शिक्षा सेवा–पूर्व या सेवाकालीन व्यवस्था करने में सफल हो जाये तो हम आशा कर सकते है कि भारत का भविष्य मूल्यों मे आस्था रखने वालों के हाथो में निश्चित रूप से सुरक्षित रहेगा यदि वर्तमान समय में शिक्षक स्वंय को सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम रूप मे प्रदर्शित करना चाहता है तो स्वंय के सशक्तिकरण के लिए उसे अपने स्तर व्यवसायिक विकास के साथ–साथ संचार एंव सम्प्रेषण तकनीक का पूर्ण ज्ञान होना तथा भारतीय संस्कृति के मूल्यों के अनुरूप शिक्षा का उचित सतुंलन एवं सम्मिश्रण करना होगा तभी वह अपने शिक्षार्थियों के साथ न्याय कर सकेगा।

संदर्भः

१ डॉ. सक्सेना सविता ज्योति प्रकाशन आगरा ।
२ भट्टाचार्य डॉ. जेसी (2008) अध्यापक शिक्षा" अग्रवाल पब्लिकेशन्स ।
३ डॉ. भट्टचार्य जी.सी अग्रवाल पब्लिकेशन्स ।